दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2026

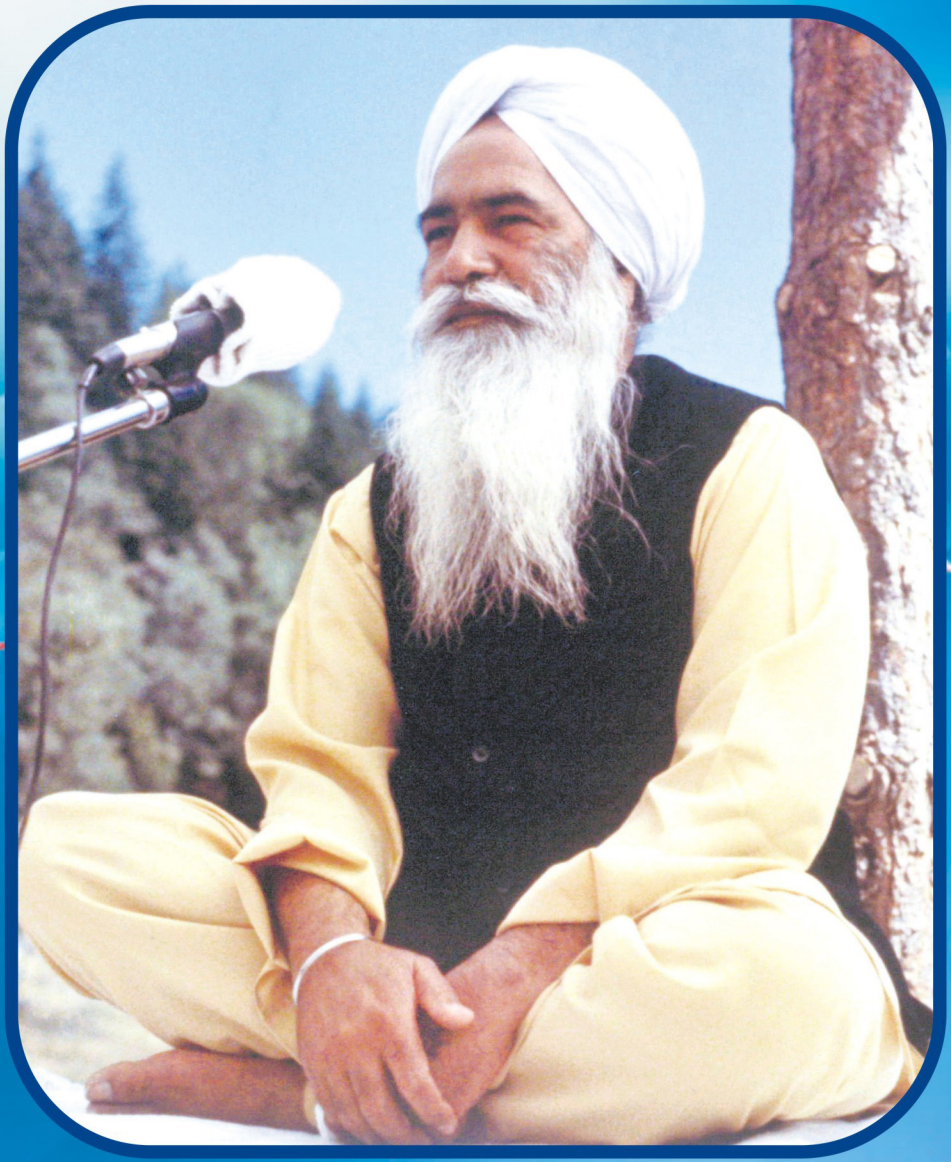

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–चौबीसवां | अंक–सातवां | नवम्बर–2026

गुरुसिक्ख की ड्यूटी 3

आत्मा का दर्द 19

किड्स कॉर्नर - परवरिश 31

प्रकाशक : सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर-335 039 जिला-श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71 उप संपादक : नन्दनी सहयोग : सुखपाल कौर

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 296 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

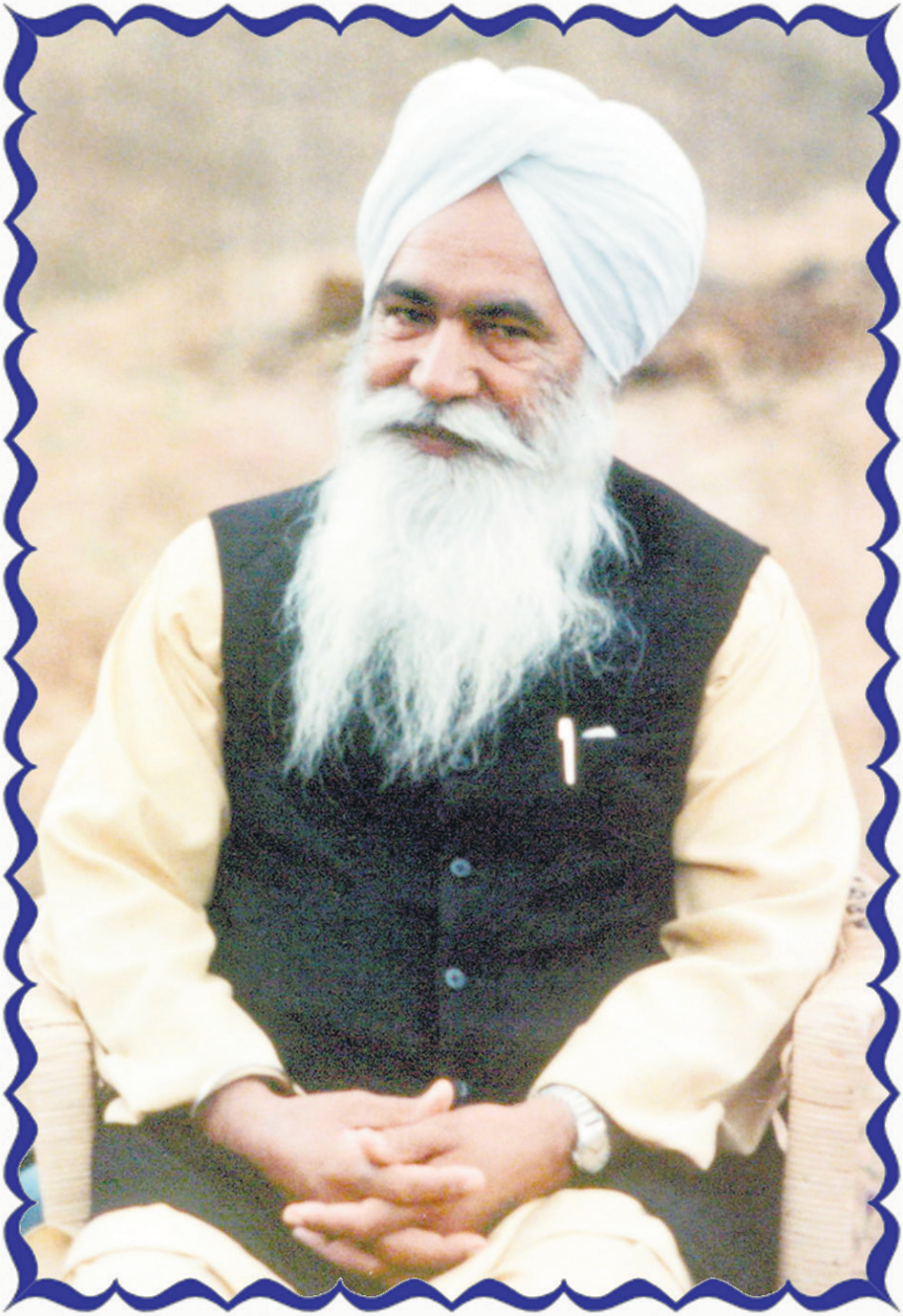

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह महाराज

गुरुसिख की ड्यूटी

21 अगस्त 1977 गुरु रामदास जी महाराज की बानी 77 आर.बी. राजस्थान

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै।।

यह बानी श्री गुरु रामदास जी महाराज की है, आप इस छोटे से शब्द में गुरुसिख की महिमा बयान करते हैं कि गुरुसिख कौन है, उसकी क्या तारीफ है, उसका क्या काम है और कहाँ जाकर गुरुसिख बनता है। गुरुसिख बनना कोई छोटी पदवी नहीं है। हम गुरुसिख तभी बन सकते हैं जब हम अपनी आत्मा को मन–माया के दायरे से ऊपर ले जाते हैं और अपनी आत्मा को इनसे आजाद कर लेते हैं।

सन्त नामदान के वक़्त हमारे अंदर नाम की छोटी सी चिंगारी रखते हैं और बताते हैं कि इसे किस तरह बढ़ाना है। जैसे–जैसे अभ्यासी अभ्यास करता है, वह वैसे–वैसे तरक्की करता है और अंदर जाकर कभी बिजली की चमक, कभी सूरज के चमकारे, कभी तारे और कभी आकाश देखता है।

इसी तरह वह एक बड़ा कमल देखता है जो खिल जाता है। यह दसवें द्वार का कमल है, उसमें से सतगुरु का स्वरूप प्रकट होता है। वहाँ जाकर वह सिख बनता है फिर सिख की ड्यूटी खत्म हो जाती है, आगे गुरु का काम है अगर ऐसा सिख मिल जाए तो वह पूजा और इज्जत के काबिल है। आप कहते हैं कि जो गुरु का सिख कहलाता है, वह सबसे पहले सुबह उठकर उद्यम करता है और नाम के साथ जुड़ता है।

उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंमृत सरि नावै।।

अब आप कहते हैं कि वह सिख नहीं जो सुबह सोया रहता है। सिख का धर्म है कि वह सुबह उठकर उद्यम करे और अपनी आत्मा को अंदर

अमृतसर (दसवें द्वार) में स्नान करवाए। श्री अमृतसर साहिब, पंजाब में सिखों का खास धाम है, उसे गुरु रामदास जी महाराज ने शुरू किया था और गुरु अर्जन देव जी ने कंप्लीट किया। तीसरे पातशाह गुरु अमरदास जी महाराज ने अपनी बानी में कई बार अमृतसर का जिक्र किया हैः

काइआ अंदरि अंमृत सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे।

वे कहते हैं कि सच्चा अमृतसर आपके शरीर, देह और वजूद में है अगर गुरु साहब का इशारा बाहर के अमृतसर की तरफ होता तो पंजाब के सारे लोग भी नहीं नहा सकते थे, हिन्दुस्तान के लोगों को तो स्नान करके मुक्ति क्या प्राप्त होनी थी। इस तरह दूसरे लोगों के साथ भारी बे–इंसाफ़ी होनी थी। गुरु साहब का इशारा जिस अमृतसर की तरफ है, वह अमृतसर हर इंसान के अंदर है और हर इंसान उसका हकदार है।

हिन्दु महात्माओं ने इसे त्रिवेणी कहकर बयान किया है कि वह त्रिवेणी आपके अंदर है, आप उसमें स्नान करें, आप मुक्त हो जाएंगे। त्रिवेणी उस जगह को कहा गया है जहां गंगा, यमुना और सरस्वती मिलती हैं। किसी महात्मा ने उसे त्रिवेणी कहा है तो किसी ने उसे प्रयागराज कहा है। महात्मा कहते हैं:

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई।।

एक तरफ इड़ा नाड़ी है, एक तरफ पिंगला नाड़ी है और बीच में सुखमना नाड़ी है, जहां ये इकट्ठी होती हैं वहीं प्रयागराज है। वहीं आपके मन और आत्मा की बैठक है, वहाँ स्नान करें। आपकी आत्मा के जन्म–जन्म के पाप उतर जाएंगे और वह मन के पंजे से आजाद हो जाएगी, अंदर जाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है और बाहर हमें आसान लगता है।

महात्मा ने तो इशारे अंदर के किए थे लेकिन हमने बाहर उन नदियों के नाम रख लिए और वहीं स्नान करने में मुक्ति समझ ली। महात्मा

समझाते हैं अगर किसी तालाब या नदी में स्नान करने से मुक्ति हो जाती हो तो हमें भजन–भाव करने या दुनिया में अभ्यास करने की क्या जरूरत है? साल–दो साल बाद या जिंदगी में दो–चार बार ही नहाना काफी था।

गुरु नानक देव जी महाराज के पास कुछ भेषी साधुओं ने आकर तीर्थों की तारीफ की कि वहाँ बहुत भीड़ होती है, आपको वहाँ जरूर जाना चाहिए। गुरु नानक देव जी महाराज ने कहा, ''मैं किसान हूँ, मुझे अभी समय नहीं है, आप हमारी यह तूम्बी ले जाएं और इसे स्नान करवा लाना।'' वे साधु हर तीर्थ पर गए, जब वापिस करतारपुर आए तो गुरु नानक देव जी ने उसी तूम्बी को काटकर उसकी सब्जी बनाकर उन्हें दी। महात्मा की हर बात में राज़ होता है। उन्होंने उन साधुओं को समझाने के लिए कड़वी तूम्बी दी थी इसलिए जब वे साधु खाने लगे तो सबने थू–थू करके थूक दिया कि यह तूम्बी तो कड़वी है।

गुरु नानक देव जी ने कहा, ''महात्मा जी, क्या आपने हमारी तूम्बी को स्नान नहीं करवाया?'' वे साधू कहने लगे कि पहले हम तूम्बी को स्नान करवाते थे। गुरु नानक देव जी कहने लगे:

नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर।
इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर।
बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर।
साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर।।

एक तूम्बी के बीजों की जहर पानी के साथ नहाने से नहीं गई, आपके अंदर तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच किस्म की जहर है। यह देह भी एक तूम्बी है अगर इसे बाहर से धो लिया तो क्या हो गया? कबीर साहब कहते हैं:

कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु।
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर।।

नहाना तो एक तरफ है अगर आप तीर्थ पर घर भी बना लें, चाहे आप रोज वह पानी पीने भी क्यों न लग जाएँ फिर भी आप भक्ति और नाम के बगैर मुक्ति हासिल नहीं कर सकते।

जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि।
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि।
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बाँचिआ जाई।
हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई।।

अगर तीर्थ नहाने से मुक्ति होती हो मेंढक तो रोज ही नहाता है, वह मुक्त नहीं हुआ। जिस तरह मेंढक नहाता है, उसी तरह इंसान है। हिन्दुस्तान में आम रिवाज था अगर कोई तीर्थ पर मर जाए तो उसकी मुक्ति हो जाती है, यहीं से अस्थियाँ विसर्जन करने का रिवाज चला अगर सारी देह वहाँ नहीं छोड़ सकते तो अस्थियाँ ही वहाँ के पानी में विसर्जित कर दें, इससे ही मुक्ति हो जाएगी।

कबीर साहब ने इस भ्रम का भी खंडन किया है अगर मन कठोर हो और सारी जिंदगी भक्ति न की हो तो अस्थियों में कोई जीव तो बैठा नहीं कि गंगा नदी में बहा दिया तो वह मुक्त हो जाएगा। काशी के पास एक जगह है, वहाँ के लोग कहते हैं कि जो इस जगह रहेगा उसकी मुक्ति नहीं होगी। जो भजन–भाव करता है वह चाहे धरती पर कहीं भी क्यों न मर जाए, उसने आप तो तरना ही था उसकी जितनी संगत होती है, वह उन्हें भी तार लेता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि हम दुनिया के लोग अपनी सोसाइटी नहीं छोड़ते। जिस तरह भेड़ें अपनी सोसाइटी नहीं छोड़ती अगर भेड़ों के बाड़े को आग लग जाए तो बचाने वाला तरस खाकर उन्हें बाहर निकालता है लेकिन वे सोसाइटी नहीं छोड़ती। हम भी कहते हैं कि हमारे बाप–दादा और परदादा वहाँ नहाते रहे हैं इसलिए ये तीर्थ बने हैं।

हम महात्मा का कहना नहीं मानते, उनका विरोध करते हैं कि वे तीर्थों की निन्दा करते हैं। महात्मा तीर्थों की निन्दा नहीं करते बल्कि उनकी असलियत बताते हैं। तीर्थों की महिमा इसलिए बनी है क्योंकि वहाँ कोई न कोई महात्मा बैठे थे, किसी महात्मा ने वहाँ अभ्यास किया। जितना समय महात्मा वहाँ रहे, उतना समय लोगों को असलियत मिलती रही लेकिन बाद में पेट के पुजारियों ने अपनी-अपनी जगह और तालाब बना लिए और लोगों से कहा कि आपकी नहाने में ही मुक्ति है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मूरख प्रानी मन सैलानी, सो अटके जल और पषान।

मनमौजी लोग पैसे इकट्ठे करके वहाँ जाते हैं और तालाब में नहाकर मूर्ति के आगे माथा टेक आते हैं। महाराज सावन सिंह जी अपने ननिहाल में मूर्ति पूजा की एक दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे कि वहाँ एक किसान के खेत में देवी की मूर्ति बनी हुई थी। उस किसान के पास थोड़ी सी जमीन थी। वहाँ लोग सात-आठ दिन के बाद देवी की पूजा करने जाते थे, जिस कारण उसकी फसल खराब हो जाती थी। उस किसान ने लोगों से काफी विनती की लेकिन लोगों ने हटना तो क्या था बल्कि कहने लगे कि तुम्हें तब पता चलेगा जब देवी तुम्हारी जड़ें काटेगी।

उस किसान ने एक मिस्त्री से बात की कि भाई, मेरे पास थोड़ी सी जमीन है, उसमें भी लोग फसल खराब कर देते हैं, बड़ी मुश्किल है। मिस्त्री ने कहा कि यह कौन सी बड़ी बात है। वहाँ पास में एक जोहड़ था जिसे शहीदों वाला जोहड़ कहते थे। उन दोनों ने रात को एक गाड़ी ली और देवी की मूर्ति उखाड़कर गाड़ी पर लादी और शहीदों वाले जोहड़ में रख आए।

अगली सुबह किसान जल्दी उठा और लोगों से कहने लगा कि रात आपने तमाशा नहीं देखा? रात तो बड़ी आतिशबाज़ी चली, बड़े छिड़काव हुए, बाजे बजे और बड़ा ही रंग-बिरंगा आसमान हो रहा था। अगर कोई

तमाशा हुआ हो तो लोगों ने देखा हो इसलिए लोग कहने लगे कि हमने तो कुछ नहीं देखा। जिस मिस्त्री ने उस किसान की मदद की थी, इतने में वह भी आ गया क्योंकि उनकी बात पहले से ही तय थी। वह मिस्त्री कहने लगा कि रात भी कोई सोने वाली थी? रात तो बड़े ही ढोल बजे, आतिशबाज़ी चली, बड़ी ही रोशनी हुई।

अब सब लोग हैरान हुए कि हमें तो कुछ सुनाई नहीं दिया। वे दोनों कहने लगे कि जोहड़ वाला शहीद, देवी को ज़बरदस्ती ब्याह कर ले गया, वह उसके साथ जाकर खुश नहीं थी। बेचारी देवी ने चीख–पुकार की कि कोई मुझे बचाओ लेकिन गाँव का कोई भी आदमी नहीं उठा। गाँव वालों ने सोचा कि जाकर देखते हैं, जब वे आगे गए तो वास्तव में ही वहाँ गाड़ी के टायरों के निशान थे और देवी शहीदों वाले जोहड़ में खड़ी थी। अब लोग शहीदों वाले जोहड़ में जाकर देवी की पूजा करने लगे। इस तरह किसान ने युक्ति से अपनी फसल बचा ली, हम लोग तो इस तरह के हैं।

इसलिए गुरु साहब कहते हैं कि सिख का धर्म है कि वह सुबह उठकर उद्यम करे। वह जब तक दसवें द्वार में पहुँचकर उस अमृतसर में स्नान न कर ले, तब तक उसे अभ्यास से नहीं उठना चाहिए। वहाँ स्नान कर लेने से ही सिख की ड्यूटी खत्म नहीं होती, उसके बाद दिन चढ़ जाता है और वह उठता है फिर सारा दिन उठते–बैठते और चलते–फिरते सिमरन न छोड़े, सिमरन से जुबान तर रखे।

लेकिन अफसोस की बात है, हम कहते हैं कि महाराज जी ने कहा था कि जब आप भजन पर बैठें तो सिमरन न करें और जब सिमरन पर बैठते हैं तो भजन न करें। सेवक को कभी भी सिमरन नहीं छोड़ना चाहिए, जब हमारे अंदर दुनिया के ख्याल खत्म हो जाते हैं फिर बेशक सिमरन न करें लेकिन जब हम भजन पर बैठते हैं तो दुनिया के ख्याल तब भी उठते हैं। हमारे अंदर सिमरन की हिलौर चौबीस घंटे उसी तरह उठनी चाहिए जिस तरह हमारे अंदर दुनिया के ख्याल उठते हैं।

उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै।।
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै।।
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै।।

अब गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि सांस ऊपर जाए तब भी सिमरन करें और सांस नीचे आए तब भी सिमरन करें। खाना खाते हुए और पानी पीते हुए भी सिमरन करें। अगर कोई सिख इस तरह सिमरन करता है तो वह गुरु के मन को भाता है। हमें पता ही है कि जो गुरु के मन को भा गया, गुरु उसमें सारी बरकतें लेकर बैठ जाते हैं और उसे अपना ही रूप बना लेते हैं। जिनकी ऐसी हालत हो जाती है कि दिन-रात ही उनकी जुबान पर गुरु का सिमरन चढ़ा रहता है, वे हमेशा ही गुरु के हो जाते हैं और गुरु उनके हो जाते हैं।

लाहौर में एक पिता-पुत्र समण और मूसण गुरु अर्जन देव जी के सिख थे, उन्हें गुरु के साथ बहुत इश्क़ था। जब गुरु अर्जन देव जी महाराज सतसंग करने के लिए लाहौर गए तो वहाँ बहुत सारे सिखों ने उन्हें न्यौता दिया कि हमारे घर सतसंग होना चाहिए। गुरु साहब ने कहा कि आप लिस्ट बना लें। वे दोनों सिख बहुत गरीब थे, उनके दिल में भी चाह थी कि हम भी घर में गुरु साहब का सतसंग कराएं और उन्हें अपनी मेहनत की कमाई की रोज़ी-रोटी का खाना खिलाएँ इसलिए उन्होंने भी अपना नाम दर्ज करवा दिया।

जो ऐसे प्रेमी सिख होते हैं, उन्हें गुरु कहीं न कहीं परख लेते हैं कि देखें तो सही, इनका प्रेम कहाँ तक है। मालिक की मौज ऐसी हुई कि जैसे-जैसे सतसंग के दिन नजदीक आने लगे, वे पिता-पुत्र दोनों बीमार होने लगे। वे दस-नाखूनों की रोज़ी-रोटी न कमा सके। उन्होंने सोचा कि गुरु को खाना तो जरूर खिलाना है और सतसंग भी जरूर करवाना है।

उनके घर के नजदीक ही एक बनिया था। उन्होंने सलाह की कि वहाँ चोरी करते हैं, परोपकार के लिए चोरी करने में क्या हर्ज है। वे बनिए की दुकान में सेंध मारकर सारा सामान निकाल लाए। जब उन्होंने आकर देखा कि नमक लाना भूल गए हैं तो उन्होंने सोचा कि दोबारा उद्यम करते हैं। जब वे दूसरी बार गए तो बनिए को जाग आ गई। पिता तो सेंध से बाहर निकल चुका था लेकिन पुत्र अभी बीच में ही था। पिता ने पुत्र के बाल पकड़ लिए और बनिए ने उसके पैर पकड़ लिए बहुत खींचातानी हुई।

आखिर लड़के ने अपने पिता से कहा कि आपके पास तलवार है, आप तलवार से मेरा सिर काट दें। आपको पता ही है कि बेटे का सिर काटना कितना मुश्किल है। वह झिझकने लगा लेकिन पुत्र ने कहा कि आदमी की पहचान सिर से ही होती है, आप मेरा सिर काट लें ताकि कोई यह न कहे कि ये गुरु के सिख होकर चोरी कर रहे थे। पिता ने तलवार से बेटे का सिर काट दिया और उसे ले गया, धड़ नीचे गिर गया।

अब बनिया सोचता है कि दिन में पुलिस आ जाएगी और कहेगी कि कत्ल तुमने किया है, सिर कहाँ छिपाया है, मैं उन्हें क्या बताऊंगा? अब सिर के बिना बंदे की क्या पहचान हो सकती है। समण ने सिर लाकर घर पर रख दिया, थोड़े समय बाद बनिया वहाँ आया और कहने लगा कि भई समणा, मेरे घर में धड़ है तुम धड़ यहाँ ले आओ लेकिन किसी से बात न करना। समण ने कहा कि ठीक है, मैं उठा लाता हूँ। वह अपने पुत्र की लाश उठाकर अपने घर ले आया और सिर जोड़कर अंदर लिटा दिया।

समण ने गुरु साहब के खाना बनाने वाले रसोइए से कहा कि यह राशन पड़ा है, आप खाना बनाएँ। उन्होंने खाना बनाया और गुरु साहब आए। जब खाने के लिए पंक्ति लगी तो गुरु साहब ने कहा, ''समणा, मूसण कहाँ है?'' उसने कहा, ''जी, वह तो बीमार है।'' गुरु साहब ने कहा कि उसे बुलाओ। वह कहने लगा, ''जी, वह मेरे बुलाने पर नहीं आ

सकता।'' गुरु साहब कहने लगे, ''उसे पंक्ति में हाजिर होना चाहिए। संगत खाना खा रही है, उसे भी खा लेना चाहिए।'' समण ने तो खुद ही उसका गला काटा था, वह कैसे बताता इसलिए उसने फिर यही कहा, ''सच्चे पातशाह, वह मेरा बुलाया नहीं आएगा, आपका बुलाया ही आ सकता है।'' गुरु साहब ने उसे खुद आवाज लगाई, ''मूसणा, आ खाना खा ले।'' बस कहने की ही देर थी, मूसण भागकर आया और संगत में बैठ गया इसलिए जो गुरु के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं, वे गुरु के मन को भी भाते हैं।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के पास एक सेवक आया। उसने सोचा कि लड़की की शादी करनी है, सन्तों से पैसे ले आते हैं। लोगों को यह भ्रम होता है कि पता नहीं सन्तों के पास कितना धन होता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि यह भी पता नहीं कि उनका लंगर कैसे चल रहा है। उस सेवक ने आकर कहा कि मैंने लड़की की शादी करनी है, मुझे कुछ पैसों की जरूरत है। निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''अच्छा भई, बैठ जा। आज जो कुछ आएगा, वह तुम ले जाना।''

मालिक की मौज उस दिन कोई भी चढ़ावा नहीं आया। वह सेवक तीन दिन बैठा रहा लेकिन तीनों ही दिन किसी भी तरफ से कुछ नहीं आया। उस सेवक ने सोचा कि जब भगवान न दें तो सन्तों ने क्या देना है और इनके पास देने के लिए है भी क्या? आखिर वह टूटे दिल से वापिस जाने लगा क्योंकि गुरु पर भरोसा नहीं था। निज़ामुद्दीन औलिया ने कहा, ''अगर तुमने लेकर जाना है तो मेरे पुराने जूते पड़े हैं, यह देख लो, तुम्हारी मर्जी है।'' फकीरों का रौब भी होता है। उस सेवक ने सोचा अगर मना किया तो वह भी ठीक नहीं, उसने चुपचाप जूते उठाए और चल पड़ा।

अमीर खुसरो दिल्ली में अपनी नौकरी के दिन पूरे करके अपनी जिंदगी के आखिरी दिन बिताने के लिए अपने मुर्शिद के चरणों में ऊंटों पर

धन लादकर आ रहे थे। उस समय चाँदी के रुपए होते थे। अब जैसे–जैसे वह सेवक मुर्शिद के जूते लिए अमीर खुसरो की तरफ आता गया, वैसे–वैसे अमीर खुसरों को अपने मुर्शिद की खुशबू आने लगी। अमीर खुसरो सोचने लगे कि मुर्शिद का आश्रम तो बहुत दूर है लेकिन यह खुशबू कहाँ से आ रही है, यह क्या राज़ है। जैसे–जैसे वह सेवक नजदीक होने लगा, वैसे–वैसे खुशबू बढ़ने लगी और दिल को खुशी मिलने लगी।

जब वह पास से गुजरा तो खुशबू पीछे से आनी शुरू हुई। अमीर खुसरो के दिल में ख्याल आया कि जो राज़ है, वह इसी इंसान के पास है। अमीर खुसरो ने उस सेवक से पूछा, ''तुम कहाँ से आ रहे हो?'' उस सेवक ने कहा कि मैं निज़ामुद्दीन औलिया के पास से आ रहा हूँ। अमीर खुसरो ने उससे पूछा, ''तुम क्या लेने गए थे?'' उस सेवक ने अपनी सारी आप बीती सुनाई कि जब भगवान न दें तो फकीरों ने क्या देना है? उन्होंने यह टूटे हुए पुराने जूते दिए हैं।

अमीर खुसरो अपने मुर्शिद के सच्चे आशिक थे। अमीर खुसरो ने कहा, ''क्या तुमने यह जूते बेचने हैं?'' सेवक ने कहा, ''मैं बेच दूंगा।'' अमीर खुसरो ने पूछा, ''इसका क्या लोगे?''अब वह सेवक उस टूटे हुए जूते का क्या मोल करता क्योंकि वह उसे कुछ भी नहीं समझता था इसलिए अमीर खुसरो से कहने लगा कि जो मर्जी दे दें। अमीर खुसरो ने कहा, ''मैं इनका असली मूल्य तो चुका नहीं सकता लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह सारा तुम ले जाओ।''

अमीर खुसरो ने अपने बीवी–बच्चों के लिए धन से लदा हुआ एक ऊंट रख लिया और बाकी के ऊँट उसे दे दिए। अमीर खुसरो ने सेवक से जूते लेकर रुमाल में बाँधे और सिर पर रखकर मुर्शिद के पास पहुंचे। वहाँ जाकर जूते मुर्शिद के आगे रखकर कहा, ''आप जूते पहने।'' मुर्शिद ने पूछा, ''अमीर खुसरो तुम्हें यह जूते कहाँ से मिले?'' अमीर खुसरो ने

रास्ते की सारी कहानी सुनाई। मुर्शिद ने पूछा कि तुमने इसका क्या दिया? अमीर खुसरो ने कहा कि मैं इसका असली मोल तो दे नहीं सका लेकिन जो मेरे पास था, मैं वह दे आया। मुर्शिद ने अमीर खुसरो को छाती से लगाया और रंग दिया। वे अपनी जगह अमीर खुसरो को ही उत्तराधिकारी बनाकर गए। अमीर खुसरो का इश्क़ देखकर निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''यह मेरी कब्र के पास न आए अगर यह मेरी कब्र के पास आएगा तो मेरी कब्र फट जाएगी।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि वाशना लेने वाला नाक भी कोई विरला ही होता है। वे कहा करते थे कि अप्रैल के दिन थे, मैं पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रहा था। यकायक दिल को बड़ी खुशी आई और महक आनी शुरू हुई। दिल में ख्याल आया कि कोई रुतबा मिलने वाला नहीं, घर पर कोई औलाद की खुशी होने वाली नहीं तो आज इतनी खुशी क्यों है, यह किस चीज़ की महक आ रही है? जब वे थोड़ा–सा आगे गए तो वहाँ एक मस्ताना फकीर बैठा था। उनके दिल में ख्याल आया कि खुशबू इसी फकीर में से आ रही थी। वह फकीर भी कहने लगा, ''वाशना लेने वाला नाक भी कोई–कोई होता है।''

अब आप प्यार से समझाते हैं कि जो उठते–बैठते गुरु को याद करता है और उनके बताए हुए तरीके के मुताबिक सिमरन करता है, वह गुरु के मन को भाता है फिर गुरु को भी कुछ देना पड़ता है। मुसलमानों की शरीयत में लिखा है कि जो तीस रोज़े रखे, रोज पाँच बार नमाज अदा करे और मक्के का हज करे, वही मुक्ति प्राप्त कर सकता है लेकिन आज तक किसी ने यह नहीं बताया कि मैं रोज़े रखकर या मक्का जाकर मुक्त हो गया।

जो मुर्शिद की शरण में गए उन्होंने अपने कलाम में गवाही दी है कि हमने मुक्ति प्राप्त कर ली है। जिस तरह मुसलमान जाति में बुल्लेशाह,

हज़रत बाहु और भी कई आदमियों ने गवाही दी है कि हमने मुक्ति प्राप्त की है। हज़रत बाहु कहते हैं:

मक्के हज्ज गए सौ वारी, दिल दी दौड़ न मुक्के हू।

जिंदगी में एक बार हज़ करना तो एक तरफ रह गया अगर हजार बार भी कोई मक्के का हज़ कर ले फिर भी उसके मन को शांति नहीं आएगी।

ना मैं त्रीहो रोज़े रक्खे,ना मैं पाक नमाज़ी हू।
मुर्शिद सोहणी कीती बाहू, पल विच जा पहुंचाया हू।।

न मैंने तीस रोज़े रखे, न मैं किसी मस्जिद में गया और न ही मैंने माला फेरी। मेरे गुरु ने बहुत अच्छा किया जो मुझे एक पल में ही बख्श दिया और मालिक के आगे खड़ा कर दिया बल्कि वे तो कहते हैं:

मुर्शिद मैनूं हज्ज मक्के दा, रहमत दा दरवाज़ा हू।
करां तवाफ़ दुआले क़िबले, हज्ज होवे नित्त ताज़ा हू।।

जब मैं गुरु का मुंह देखता हूँ तो मक्के का हज़ हो जाता है। गुरु रहमत का दरवाजा हैं अगर कोई रहमत करता है तो गुरु ही करते हैं। जब मैं अपने मुर्शिद की परिक्रमा कर लेता हूँ तो मेरा ताजा हज़ हो जाता है। बल्कि वे तो यहाँ तक कहते हैं:

मक्के दे वल सोई जांदे, घरों जिन्हां तरोटी हू।
उचियाँ बाँगाँ सोई देवण, नीत जिन्हां दी खोटी हू।
की परवाह तिन्हां नू बाहू, जिन्हां घर विच लध्दी बूटी हू।।

जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै।।

अब दिल तो हर एक का करता है कि मैं गुरु–परमात्मा के पास जाऊँ। गुरु के पास जाना कौन सी मुश्किल बात है अगर परमात्मा दया–मेहर न करें तो हम कभी भी गुरु से नाम–दान प्राप्त नहीं कर सकते, यह बात हमारी समझ में ही नहीं आती। कई लोग कह देते हैं कि हमें गुरु की कोई जरूरत नहीं लेकिन बानी पढ़कर तसल्ली कर लेनी चाहिए।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि जब तक परमात्मा दयाल न हों और मेहर न करें चाहे गुरु पड़ोस में रहने लग जाएँ चाहे घर में जन्म ले लें, हमें उनका पता ही नहीं चलता। गुरु नानक देव जी की बानी तो बहुत ठोकरें मारती है। गुरु साहब कहते हैं:

नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरो पइआ संजोगु।

मालिक जिनका संयोग धुर–दरगाह से ही लिख देते हैं सिर्फ उन्हें ही गुरु से मिलाया जाता है। गुरु साहब कहते हैं:

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी धृगंत जनम भ्रसटणह।
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह।।

जो इंसान गुरु के नाम के बिना है, वह कुत्ते, गधे, सूअर और साँप जैसा है। इससे ऊपर वे हमें क्या कहेंगे? कबीर साहब कहते हैं:

कबीर निगुरा न मिले पापी मिले हजार।
इक निगुरे की पीठ पर लाख पापों का भार।।

गुरु साहब कहते हैं:

कहु नानक निहचउ धिआवै, विणु सतिगुर वाट न पावै।

आप निश्चय करके यह बात मान लें कि आप गुरु के बिना मालिक के दरबार में नहीं पहुँच सकते। गुरु अमरदास जी महाराज कहते हैं:

अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए।
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए।।

आप चाहे जितनी मर्जी योनियों में जा आएँ, मुक्ति गुरु के चरणों में आकर ही होगी और गुरु से नाम लेना पड़ेगा। गुरु साहब कहते हैं:

जिस का गृहु तिनि दीआ ताला कुँजी गुर सउपाई।
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई।।

परमात्मा ने देह–वजूद बनाई है और परमात्मा ने ही ताला लगाकर चाबी गुरुमुखों के हवाले कर दी है। आप जब तक गुरु की शरण में नहीं जाते, चाहे मन–बुद्धि से जितने मर्जी उपाए कर लें, आप वह ताला कभी नहीं खोल सकते। गुरु साहब कहते हैं:

गुरु कुँजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति।
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुँजी हथि।।

गुरु चाबी हैं, मनुष्य ताला है और शरीर छत है। हम जब तक ताले में चाबी नहीं लगाएंगे, वह कभी भी खुल नहीं सकता। गुरु के बगैर किसी और के हाथ में चाबी नहीं है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

बिनु सतिगुर किनै न पाइआ।
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ।।

हम हाथ ऊँचा करके यह बात कहते हैं कि गुरु के बगैर आज तक किसी ने परमात्मा को प्राप्त नहीं किया। गुरु अर्जनदेव जी कहते हैं:

कहु नानक प्रभि इहै जनाई, बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई।

वे फिर कहते हैं:

भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ, प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ।

जब हमारा भाग्य उदय हुआ तो परमात्मा ने हमारा मिलाप गुरु रामदास जी महाराज से करवाया। उन्होंने हम पर दया करके हमें बताया कि परमात्मा आपके शरीर, देह और वजूद में हैं।

बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था।

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।।

आपने इस छोटे से शब्द में बताया है कि गुरु का सिख कौन है और वह कहाँ पहुँच कर गुरसिख बनता है। आखिर में आकर आप कहते हैं कि मैं ऐसे गुरुसिख के पैरों की धूल मांगता हूँ जो नाम जपता है और दूसरों

को भी नाम जपाता है। जो नाम नहीं जपता लेकिन लोगों से नाम जपने के लिए कहता है, वह खुद भी खुष्क रहता है और दूसरों को भी खुष्क रखता है। कबीर साहब कहते हैं:

जा के हिरदे गुरु नहीं, सिष साखा की भूख।
ते नर ऐसा सूखसी, ज्यों बन दाझा रुख।।

जो नाम की कमाई और गुरु से प्यार नहीं करता, जिसने कभी गुरु का हुक्म नहीं माना कि इस तरह भजन–अभ्यास करना है लेकिन उसे आगे शिष्य बनाने की भूख लगी हुई है कि सारी दुनिया आकर मुझे गुरु माने। वक्त साबित करता है कि वह इस तरह सूख जाएगा जिस तरह जंगल में कोई पेड़ खड़ा–खड़ा ही सूख जाता है।

हुजूर महाराज जी कहा करते थे कि ओछा आदमी अपनी सफाई पेश करने में लगा रहता है लेकिन समझदार आदमी वक्त की इंतजार में होता है, वक्त अपने आप ही बता देता है। इसलिए आप कहते हैं कि मैं ऐसे गुरसिख के पैरों की धूल मांगता हूँ जो 'शब्द–नाम' की कमाई करता है। गुरु साहब कहते हैं:

जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ।

अगर हम कोई ऐसा सिख ढूँढे तो कोई विरला, करोड़ों में एक–आधा ही मिलेगा। गुरु तेग बहादुर जी महाराज कहते हैं:

कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति।

इसलिए हमें भी चाहिए कि गुरु साहब के कहे मुताबिक गुरुसिख बनने की कोशिश करें, गुरुसिख की ड्यूटी को निभाएँ और इस जीवन को ऊँचा–सुच्चा लेकर जाएँ।

***

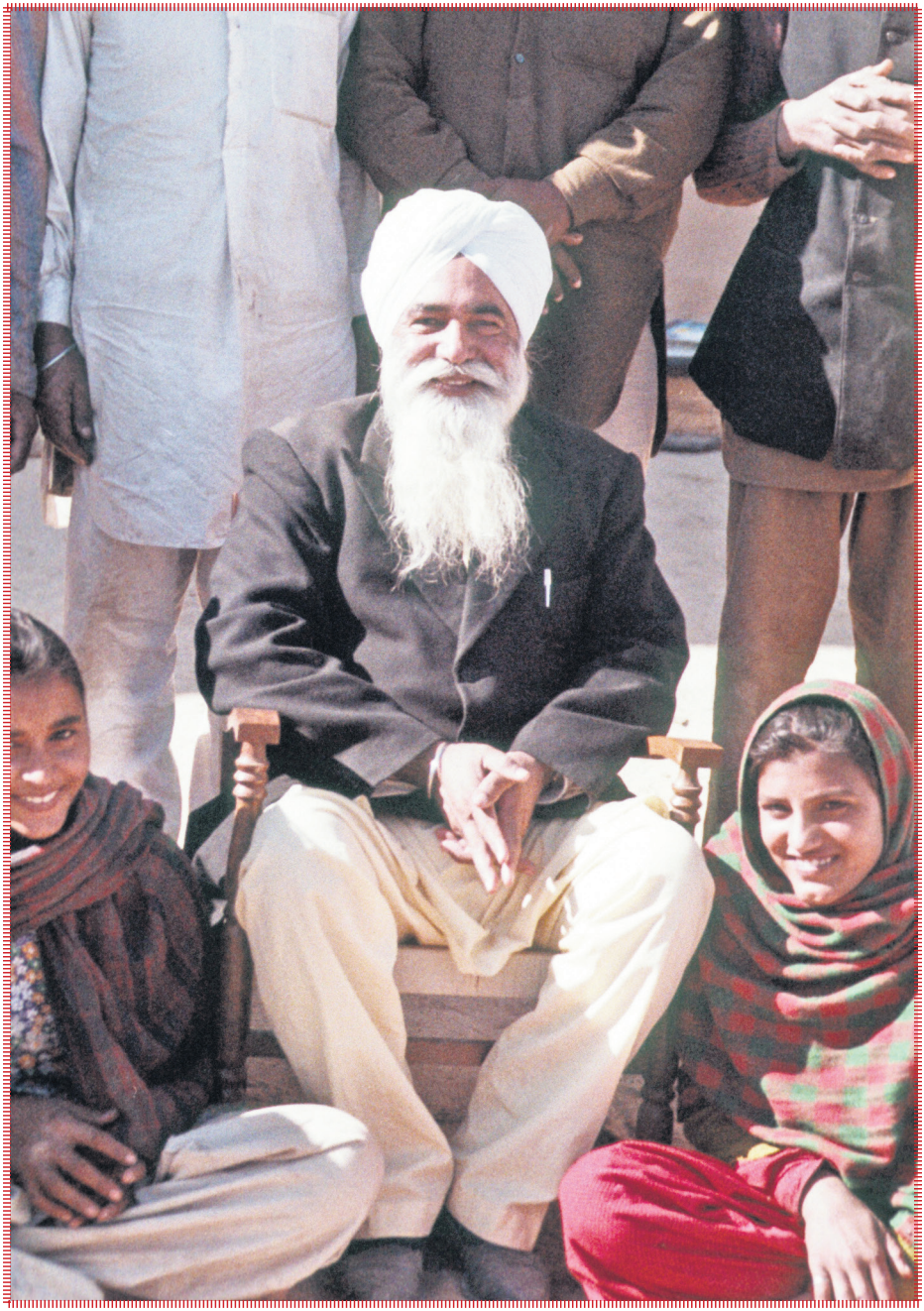

परम सन्त अजायब सिंह महाराज के मुखारविंद से

आत्मा का दर्द

06 फरवरी 1993 — 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

मैं अपने सतगुरु सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर बड़ी भारी दया की अगर हमें यह पता चल जाए कि हम रूहानियत में कितने दिवालिएपन पर आ चुके हैं तो हमारे दिल में दर्द पैदा होगा। कबीर साहब कहते हैं:

चले जुआरी दुइ हथ झारि।।

जैसे जुआरी दोनों हाथ झाड़कर शाम को खाली हाथ घर आ जाता है, इसी तरह हम भी इस संसार से खाली हाथ चले जाते हैं क्योंकि हमें यह अहसास ही नहीं कि हमारी आत्मा में जन्म–जन्मांतर से जो कमजोरी है उसे कैसे दूर करना है? प्यारेयो, आत्मा का दर्द और आत्मा का प्यार दिखाया नहीं जा सकता। इस **आत्मा को दर्द** देने वाला बेखबर नहीं होता।

गुरु ही शिष्य को ढूँढता है, चाहे शिष्य कितना भी दूर या नजदीक क्यों न हो। यह गुरु का ही चुनाव होता है वही दर्द और प्यार देता है। दर्द और प्यार देने वाला जानता है कि मैंने ही इसकी संभाल करनी है। डाक्टर दवाई देता है, वह जानता है कि मैंने मरीज की देखभाल भी करनी है।

आत्मा का दर्द हर एक के नसीब में नहीं होता क्योंकि हम तैयार नहीं होते। वह हमारी चाहत के अनुसार ही हमें देते हैं। मैं बताया करता हूँ कि कोई भी अंदर बैठे सतगुरु को बेवकूफ नहीं बना सकता बेशक वे हमारे साथ हँसते–खेलते और बातचीत करते हैं लेकिन वह अंदर से पूरी तरह सचेत होते हैं, उनकी सुरत सदा ही परमात्मा में समाई रहती है, अंदर वाले स्वरूप को बाहर वाले का पूरा ज्ञान होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम गुरु के पास जाकर तब तक ही बातें करते हैं जब तक यह नहीं जानते कि गुरु क्या हस्ती हैं, यह अपनी–अपनी सोच और भावना का सवाल है।'' गुरु साहब कहते हैं:

जाकी होय भावना जैसी, हर मूरत देखी तिन तैसी।

पप्पू ने मुझे अंग्रेजी की एक किताब में से कुछ प्रेमियों के महाराज कृपाल के साथ हुए अनुभवों के बारे में पढ़कर सुनाया। उनके अनुभव इस तरह के थे कि महाराज जी ने मेरी बीमारी दूर की। वे मेरे घर बिना बुलाए आए। मेरे पति बीमार थे उन्होंने उसे ठीक किया। उनकी दया से मुझे नौकरी मिली, मैंने उस किताब का जितना हिस्सा सुना उसमें इससे ज्यादा और कुछ भी नहीं था, यह सब अपनी–अपनी सोच है।

जब वे प्रेमी 77 आर.बी. आश्रम में मेरे पास आए, मैंने उन्हें अपना जो अनुभव रिकार्ड करवाया, वह उन्होंने उस किताब में नहीं छापा क्योंकि वह एक अजीब ही किस्म का अनुभव था। उन्होंने सोचा कि अगर इस अनुभव को छाप दिया तो हमारे पल्ले क्या रह जाएगा कि परमात्मा कृपाल कैसे थे और हम क्या लिख रहे हैं। हम जानते हैं कि निहंग मस्त ख्यालों के होते हैं। एक दिन एक बुजुर्ग निहंग ने मुझसे कहा, ''मुझे गुरुबानी के बारे में कुछ जानकारी दें।'' सुखमनी साहब में आता है:

संत कृपाल कृपा जे करै, नानक संतसंगि निंदकु भी तरे।

उस निहंग ने इस तुक का मतलब पूछा। मैंने उसे हँसकर कहा, ''हम तीन आदमियों ने गुरुग्रन्थ साहब को पढ़ने में छह महीने लगाए हैं लेकिन अभी तक हमें इसकी समझ नहीं आई। अगर हमें समझ आ गई और हम जिन्दा रहे तो तुझे जरूर बताएंगे।''

फरीदकोट के राजा ने बहुत अच्छे–अच्छे विद्वानों को बुलवाकर गुरुग्रन्थ साहब का टीका करवाया था। उन दिनों मैंने उसे बहुत प्रेम–प्यार से पढ़ा और विचारा। अगर अंधा आदमी हाथी को देख भी ले तो वह

उसकी जानकारी नहीं दे सकता, आँखों वाला हाथी को देख ले तो वह उसकी सारी जानकारी दे सकता है। सन्तों ने परमात्मा को देखा होता है, वे परमात्मा की जानकारी दे सकते हैं। वे परमात्मा तक पहुँचने का साधन भी बता सकते हैं। हमें कामयाब होने के लिए सबसे पहले ऐसे महापुरुष के चरणों में जाना पड़ेगा जिसने खुद अपनी जिंदगी में यह मसला हल किया है। जब तक हम मुर्शिद से इल्म न लें तब तक हम गँवार ही रहते हैं।

मुर्शिद पासों इल्म न पढया़, सारी उम्र गँवार रहे।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि परमात्मा ने मेरी विरासत में पिछली रात का सोना दर्ज नहीं किया। मैं छोटी उम्र में भी पिछली रात कभी नहीं सोया था, मैं नहीं बता सकता कि ऐसा क्यों था? दिल में एक दर्द और कमी सी महसूस होती। मैं चारपाई से उठकर, जमीन पर बोरी बिछाकर लेट जाता। मेरा पालन–पोषण करने वाले माता–पिता इस बात को अच्छा नहीं समझते थे, वे मुझ पर गुस्सा होते। मैं उनसे माफी माँग लेता लेकिन विरोध नहीं करता था। मैं समझता था कि यह गलत है लेकिन यह सब मेरे बस का रोग नहीं था।

परमात्मा कृपाल सदा ही कहते रहे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है, वह जानता है कि आग किस जगह लगी है।'' सन्त और परमात्मा का ऐसा रिश्ता होता है जैसे फूल से खुशबू को अलग नहीं किया जा सकता। कबीर साहब ने कहा है, ''राम और सन्त में कोई भिन्न–भेद नहीं होता।'' सन्त में परमात्मा वाले ही गुण होते हैं, वही रहनुमाई होती है। जब हम ऊपर जाते हैं तब सन्तों की समझ आती है और हम उनका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारे लिए इतना कुछ किया। पल्टु साहब कहते हैंः

लए दए आप दे मुझको बदनामी।

जब सन्त आते हैं तब पंडितों, मौलवियों और भाइयों के रोजगार में कुछ फर्क आ जाता है। ये लोग सन्तों की निन्दा करने लग जाते हैं, हम

कम बुद्धि वाले लोग उनके बहकावे में आ जाते हैं। सन्त जिस प्यार के हकदार होते हैं, हम उन्हें वह प्यार नहीं देते बल्कि हम उनकी जान के दुश्मन बन जाते हैं।

इतिहास गवाह है कि गुरु नानकदेव जी को कुराहिया कहा गया। उस समय के लोग उन्हें गाँव में नहीं आने देते थे कि यह लोगों की अक्ल बिगाड़ता है। गुरु नानकदेव जी दस जामें धारण करके एक ही रूप में आए कि शायद लोग किसी जामें में तो उन्हें जरूर पहचान लेंगे।

दसवें जामें में तो उनके साथ ऐसा व्यवहार किया गया कि जिसे पढ़कर और सुनकर शर्म महसूस होती है। उस मालिक के प्यारे के अंदर हमारी आत्माओं के लिए दर्द था। उनके बच्चों को दीवार में चिन दिया गया, उनका घर–घाट लूट लिया गया। उनके पास दिन में ठहरने और रात को सोने के लिए भी जगह नहीं थी।

सन्तों का यही अपराध होता है कि उनके दिल में हमारी **आत्मा के लिए दर्द** होता है, वे हमें लेने के लिए आते हैं। हमें उनसे जो फायदा उठाना होता है, हम उससे वंचित रह जाते हैं।

जिस परमात्मा ने इस आत्मा को दर्द दिया था, वे कृपाल के रूप में संसार में आए। जिसने दर्द दिया होता है वही जानता है। सोचकर देखें, जो आपसे पाँच सौ किलोमीटर दूर रहता हो, दुनियावी तौर पर आप उसे न जानते हो, वह भी आपको न जानता हो। आत्मा उसी की अंश है। सन्त आत्मा के वाकिफकार होते हैं कि मेरी आत्मा मेरी तड़प में कहाँ बैठी है। उन्होंने दया करके मुझे सन्देश भेजा, ''आप घर पर ही रहें, मैं आ रहा हूँ।''

शिष्य हर तरह से अपने गुरु की बड़ाई करते हैं, शिष्य अपने गुरु की बड़ाई सुनकर खुश होते हैं। मैं जितने प्रेमियों को जानता था, मैंने उन्हें सन्देश भेजा कि महाराज जी आ रहे हैं। उन दिनों मेरा प्यार लाला परिवार के साथ था, मैंने उस परिवार को विशेष तौर पर बुलाया।

ससी ने दुनियावी तौर पर पुन्नू को नहीं देखा था। एक बार ससी बाजार से निकल रही थी, उसने फोटोग्राफर की दुकान पर पुन्नू की फोटो देखी। पुन्नू बलोच जाति का था, वह भंभोर शहर में अपना कारोबार करने के लिए आया था। फोटोग्राफर ने अपनी दुकान को सजाने के लिए पुन्नू की फोटो खींचकर अपनी दुकान पर लगा ली।

ससी उस फोटो को देखती ही रह गई। ससी ने फोटोग्राफर से पूछा कि यह फोटो किसकी है? फोटोग्राफर ने कहा, ''बहन, मैं इसे नहीं जानता, यह यहाँ से निकल रहा था, मैंने इसकी फोटो खींच ली।'' ससी ने उससे कहा,''भाई, तू यह फोटो मुझे दे दे।'' फोटोग्राफर ने कहा, ''मैं तुझे यह फोटो तो नहीं दे सकता और फोटो बना देता हूँ।'' ससी उस फोटो के प्यार में खाना–पीना भी भूल गई।

ससी बादशाह की बेटी थी। ससी के पिता ने जब उसे उदास देखा तो उसके लिए अलग से कोठी बनवा दी और बाग लगवा दिया। वह अपनी सहेलियों के साथ बाग में खेलने जाती लेकिन दिल वहीं का वहीं था। भंभोर और केचम शहर में बहुत फासला था। दिल को दिल से राह होती है। पुन्नू को स्वपन में ससी दिखाई दी।

प्यारेयो, जब दुनियावी दिल को इतना राह होता है तो क्या परमात्मा **आत्मा के दर्द** को नहीं समझेगें? पुन्नू अपना कारोबार करने के लिए फिर भंभोर शहर की तरफ आया। उसने अपनी ऊँटनियों को ससी के बाग में छोड़ दिया। ससी की सहेलियों ने उसे बताया कि किसी बलोच जाति वाले ने तेरा बाग उजाड़ दिया है।

वह बड़े गुस्से से उस तरफ गई कि किसकी हिम्मत है जो बादशाह के बाग में ऊँटनियाँ छोड़ दे! वह वही था जिसकी याद में वह दिन–रात तड़प रही थी। इतिहास बताता है कि ससी ने पुन्नू की याद में बारह साल बिता दिए। जब मिलाप हुआ तो वे चारपाई पर सो गए, उनका प्यार सच्चा था।

उनके दिल हम लोगों की तरह विषय–विकारों से भरे हुए नहीं थे। पहले मुसलमानों में यह रिवाज था कि जो इन्सान मिजाजी इश्क में कामयाब होता है, वही रूहानियत में कामयाब होता है अगर आप मिजाजी इश्क में ही गिर गए तो रूहानी इश्क कैसे कमा सकते हैं?

इश्क मिजाजी और हकीकी, इको जेहा व्यवहार करे।

दोनों इश्कों में एक जैसी तड़प, एक जैसी आग और एक जैसी विरह होती है लेकिन यह एक पुल की तरह है जैसे पुल दरिया को पार करने का रास्ता है जो यहाँ अटक गया वह बह गया। ससी और पुन्नू का ऐसा ही पवित्र प्यार था अगर ससी और पुन्नू अंदर जाते होते तो एक–दूसरे के प्यार को समझ सकते लेकिन यह प्यार दुनियावी था। कुछ लोगों ने पुन्नू को उठा लिया, पुन्नू ससी को सोता हुआ छोड़कर चला गया।

यह एक दुनियावी प्यार की कहानी है। और भी कई लोगों ने उस फोटो को देखा था लेकिन उनके अंदर दर्द पैदा न हुआ, यह दर्द ससी की किस्मत में ही था। इसी तरह परमात्मा कृपाल को देखने और मिलने वाले बहुत लोग थे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु।।
डिठै मुकति न होवई जिचरू सबदि न करे वीचारु।।

जिसे हम सोहणा, पवित्र और मन को मोहने वाला कहकर बयान करते हैं वह 'शब्द–गुरु' है। वह बाहरी रूप से मिलता–जुलता होता है। पाँच तत्वों का भौतिक शरीर इस संसार में रह जाता है, शब्द–रूप गुरु ही शिष्य की आत्मा में समाता है।

जब हजूर कृपाल पहली बार मेरे आश्रम में आए, हजारों ही आदमी उनके दर्शनों के लिए बैठे हुए थे। मैंने देखा कि उनका चाँद जैसा रिशमां भरा चेहरा था, उनकी जुल्फें शिवजी के गले के सांपों को मात दे रही

थी, नाक दुखों का नाश करने वाली थी, भौंहे कमान की तरह थी, आँखें मृग की तरह मनमोहनी थी, सूरत मन को मोहने वाली थी, कमर पतली शेर की तरह थी और चाल हाथी की तरह मस्त थी। उनसे नजरें मिलते ही आँखें चार हुई तो उन्होंने अपनी पहली नजर से ही इस गरीब आत्मा को अपनी तरफ खींच लिया और अपना बना लिया। मुझे अपनी जिंदगी में जिस कन्त की तलाश थी वह मुझे मिल गया।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि मेरे परिवार में मेरी शादी के लिए बहुत संघर्ष हुआ। भोलेपन में मेरे मुँह से यही निकला, ''जिसने मेरा दुल्हा बनना है वह खुद ही आ जाएगा।'' मेरी माता ने कहा, ''भोले, आदमी की शादी आदमी के साथ नहीं लड़की के साथ होती है।'' यह मैं नहीं कह रहा था, यह मेरी आत्मा की आवाज थी। वही मेरा पति बनकर आया, मेरी आत्मा ने उसे अपना प्यारा पति मान लिया।

जिस तरह बच्चे को खिलौना मिल जाए तो वह हर तरफ से अपना ध्यान हटाकर उस खिलौने को गौर से देखता है फिर मस्त होकर उस खिलौने के साथ खेलने लग जाता है। अगर बच्चे से वह खिलौना छीनें तो बच्चा मरने–मारने के लिए तैयार हो जाता है इसी तरह औरत अपने पति को नहीं छोड़ सकती।

जब मंसूर को रस आया तो वह सूली पर चढ़ गया, जब शम्स तबरेज को रस आया तो उसने अपनी खाल उतरवा ली। जब शर्मद को फाँसी देने लगे तब औरंगजेब ने भी कहा कि कपड़े तो पहन लो। शर्मद ने कहा, ''मैं किससे पर्दा करूं, मुझे तो यहाँ कोई मर्द ही नजर नहीं आ रहा। मर्द तो सिर्फ एक परमात्मा ही है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी प्यार से यही कहा:

इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई।

जिन आत्माओं को परमात्मा ने रद्द किया होता है, वे जगह–जगह जाकर जन्म लेती हैं और भटकती फिरती हैं। जगह–जगह जाकर जन्म

लेने वाली आत्मा कभी औरत बनकर विधवा हो जाती है, कभी पुरुष बनकर विदुर हो जाती है। यह दु:ख हर जन्म में है। अगर आप ध्यान से देखें कि पशु–पक्षियों की आँखों से भी पानी निकलता है, वे भी अपने साथियों के लिए रोते हैं। हम घरों में जानवरों को पालते हैं। जब किसी गाय या भैंस का बछड़ा गुजर जाता है तो वह दूध नहीं देती, घरवाले उस गाय को पीटते हैं। हम उस गाय की विरह और हालत को नहीं समझते। गाय दिन–रात रोती है अगर हम उसके दु:ख को समझें तो क्या उसे डंडों से मारेंगे? हम उसकी देखभाल करेंगे और उसे हौंसला देंगे। ऐसा करने वाले उस गाय से दूध भी ले लेते हैं।

हम दुनियावी लोग भी एक–दूसरे के पास जाकर हौंसला देकर कहते हैं, ''देख भाई सब्र कर, यह जिंदगी मौत–पैदाइश की है, जो आता है वह चला जाता है।''

सन्त सबसे पहले शिष्य को समझाते हैं और उसके कर्मों के मुताबिक उसे थोड़ी सी पूँजी भी देते हैं। मन–माया के दायरे से ऊपर सुन्न–मंडल में ले जाकर 'राम–नाम' का खिलौना देते हैं। सन्त इसे अगम अगोचर कहकर बयान करते हैं। वहाँ पहुंचकर पता चलता है कि सन्तों की बानी क्या कहती है।

सन्त यह नहीं कहते कि हमारे पास पुन्नी ही आएं, वे कहते हैं कि आपने जो पाप कर लिए हैं 'नाम' लेने के बाद आप वहीं रुक जाएं, आगे के लिए वादा करें कि अब हम कोई बुरा कर्म नहीं करेंगे। अगर 'नाम' लेकर फिर वही कर्म करेंगे तो हममें और दुनियादारों में क्या फर्क रहा? धोबी जैन्टलमेन या हलवाई के कपड़े धोने से मना नहीं करता, उसे अपने करतब पर मान होता है।

सन्तों को यह ज्ञान होता है कि पापों की दलदल के नीचे शुद्ध आत्मा है, सन्त नाम के साबुन से आत्मा को शुद्ध कर देते हैं। सन्त हमें जो

अभ्यास का तरीका बताते हैं यह साबुन है, वे उसमें सतसंग का पानी डालते हैं। जिन्हें सतसंग का रस आ जाता है, वे सतसंग नहीं छोड़ते।

बहुत से प्रेमी महाराज सावन सिंह जी से कहते, ''जब हम सतसंग के लिए आते हैं तो लोग हमें ताने मारते हैं।'' वे कहते, ''ऐसे लोग आपको मजबूत बनाते हैं कि कहीं आप सतसंग में जाना भूल न जाएं।'' जब गुरु अमरदास जी को अनुभव हुआ, तो उन्होंने कहा:

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै पाइआ।।
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ।।

मैं जब नौं द्वारे खाली करके अंदर जाकर 'शब्द' के साथ जुड़ा तो मेरी आत्मा को बहुत खुशी हुई। यह बातों का विषय नहीं करनी का मजबूत है।

जब हम सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को छोड़कर इससे ऊपर चौथे मंडल में पहुँचते हैं उसे सहज अवस्था कहा गया है। जो मन क्षण भंगुर विषय–विकारों के स्वाद के लिए जिंदगी बर्बाद कर रहा था, ब्रह्म में पहुँचकर यह भी खुश हो जाता है। इन्द्रियाँ मन की गुलामी से बच जाती हैं, आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है।

राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ।।

मोहजाल की कहानियों में परियों का जिक्र आता है। हम लोग सुन्दर लड़की को परी जैसी कहते हैं। सन्त इन्द्रियों को परियाँ कहकर बयान करते हैं क्योंकि इन्द्रियों ने हमें मोहित किया हुआ है, हम इन्द्रियों की ख्वाहिश शरीर से पूरी करते हैं।

गुरु शिष्य की कहानी बयान नहीं की जा सकती। जिस तरह लड़की सुसराल से मायके वापिस आती है तो उसकी सखियाँ उससे पति के मिलाप की कहानी पूछती हैं। वह लड़की बता तो सकती है लेकिन क्या बताए? वह सिर्फ मुस्कराकर ही रह जाती है।

मुसलमानों में सैयदों की बहुत इज्जत है, उन्हें पूजा जाता है। बुल्लेशाह सैयद जाति के थे। उनके गुरु नीची जाति के खेतीबाड़ी करने वाले अराईं थे। बुल्लेशाह के परिवार और समाज के लोगों ने पूछा, ''सारी दुनिया मक्का की तरफ जाती है लेकिन तुम एक अराईं के पास जाते हो, उस अराईं में ऐसी क्या बात है?'' बुल्लेशाह ने कहा, ''मैं आपको उस अराईं के बारे में क्या बताऊँ? बाहर से दिखने में तो वह हाड़-माँस का पुतला है अगर अंदर जाकर देखें तो आप बहिश्त में भी नहीं थूकेंगे। अब मेरी जाति-पाति, इज्जत अराईं ही है अगर आप मुझे सैयद कहेंगे तो आपको दरगाह में सजा मिलेगी। अगर आप इज्जत-मान प्राप्त करना चाहते हैं तो मुझे अराईं कहकर बुलाएं।''

परमात्मा कृपाल ज्ञान के भंडारी थे इसलिए वे बाबा सावन सिंह जी के चुनाव में आए। वे अपनी तनख्वाह का बहुत सा हिस्सा लोगों में बाँट देते कि लोग इन पैसों से किराया खर्च करके बाबा सावन सिंह जी से 'नाम' ले आएं।

मैं पिछले दिनों मई-जून के महीने में अमेरिका और कनाडा गया। वहाँ की एक अमेरिकन औरत ने बहुत सा धन खर्च करके कई सतसंगियों को कनाडा में सतसंग सुनने के लिए हवाई जहाज की टिकटों का बन्दोबस्त किया। सोचकर देखें, जिन्हें 'नाम' और सतसंग की कद्र होती है, क्या उनसे उनका मालिक कुछ छिपा सकता है?

अगर गुरु शिष्य की कहानी को बयान करना चाहें तो बयान कर ही नहीं सकते। हमारे कर्मों के मुताबिक ही हमारा बर्तन बनता है। मैंने अपने गुरुदेव से पहली मुलाकात में यही कहा, ''बचपन से मेरा दिल और दिमाग खाली है, मैं नहीं जानता कि मुझे आपसे क्या कहना है?'' उन्होंने कहा,''मैं खाली जगह देखकर ही आपके पास आया हूँ, मेरे पास दिमागी कुश्तियाँ करने वाले बहुत लोग रहते हैं।''

सन्त पढ़ने–लिखने को बुरा नहीं कहते। वे पढ़े–लिखे की कद्र करते हैं लेकिन करनी पर ज्यादा जोर देते हैं अगर आप सिर्फ पढ़ते हैं, उस पर अमल नहीं करते तो आप उस गधे की तरह हैं जिसकी पीठ पर हजारों मण किताबें लदी हुई हैं लेकिन वह खुद इल्म से कोरा रह जाता है। वे खुद अंदर नहीं जाते और लोगों को कथा–कहानियाँ सुनाकर खुश करते हैंः

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु।।
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु।।

मैं अपनी जिंदगी का एक वाक्या बताया करता हूँ। बहुत पुरानी बात है मैं एक बार रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। डबवाली स्टेशन से एक जटाधारी बाबा रेलगाड़ी में चढ़ा। वह बहुत जोर–शोर से प्रचार कर रहा था,''चुगली करना बुरा है, शराब–सिगरेट पीना बुरा है, डालडा खाना बुरा है।'' लेकिन उसने खुद शराब पी रखी थी और सिगरेट भी पी रहा था।

रेलगाड़ी में एक साठ साल की औरत भी बैठी थी। वह बोल पड़ी, ''बाबा, तुमने शराब पी रखी है और सिगरेट भी पी रहे हो, लोगों को क्या उपदेश कर रहे हो?'' बाबा ने बहुत गुस्से से उस औरत से कहा, ''तुम लोग सन्तों की कद्र नहीं करते।'' उस औरत ने कहा, ''अगर सारे सन्त तेरे जैसे हों तो सिगरेट और शराब वालों की तो मौज हो जाएगी।'' ऐसे लोग औरों को तो उपदेश करते हैं लेकिन खुद इन ऐबों से चिपके होते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि रत्ती भर अभ्यास सौ मन किताबी ज्ञान से भी ज्यादा वजनदार होता है इसलिए सन्त अभ्यास पर जोर देते हैं। करनी करने के बाद अंहकार से भी बचें। आप सोचें कि कोई आपसे यह करनी करवा रहा है। हमारी जैसी भावना होती है हमें सन्तों का वैसा ही अनुभव होता है। सन्त संसार में सबके लिए समान रूप से आते हैं।

परमात्मा ऐसी हस्ती को संसार के भले के लिए भेजते हैं। हम सांसारिक लोगों को वापिस अपने घर सच्चखंड जाने का मौका मिलता है

लेकिन हम सन्तों के पास जाकर दुनिया की चीजें माँगते हैं। नाम के ग्राहक और गुरु से गुरु को माँगने वाले कम ही होते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमें मिलाप करने वाला कोई नजर ही नहीं आता।''

महाराज कृपाल की नामलेवा एक अमेरिकन बुजुर्ग औरत हिन्दुस्तान आई। उसने मुझसे कहा, ''मैं आपको अपना प्यारा भाई समझती हूँ। आप मुझे अपना दर्द बताएं?'' जब मैंने हँसकर उसे अपना दर्द बताया तो उसने कहा कि यह तो दूर नहीं हो सकता।

सन्त कहते हैं, ''इस संसार में उनके दर्द की कहानी सुनने वाला उनका गुरु ही होता है। जब गुरु के पाँच तत्त्वों का शरीर आँखों से ओझल हो जाता है तो उन्हें कोई मेली नजर ही नहीं आता।'' आप यह शब्द पढ़ते हैं:

मैं तो कृपाल से बिछुड़ कर रोई रे।।

जब गुरु नानकदेव जी से उनके जन्मदिन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने यही कहा:

सतगुरु कै जनमे गवनु मिटाइआ, अनहति राते इहु मनु लाइआ।।

सन्त तन धारण करके आते हैं और हमें हमारे भाग्य के अनुसार सच्ची–सुच्ची दौलत देते हैं। जब 'नाम' मिल जाता है तो सतगुरु के घर में जन्म हो जाता है, आवागमन का चक्कर खत्म हो जाता है। हम उस दिन से बलिहार जाते हैं।

हम जिस तारीख पर किसी महापुरुष का जन्मदिन मनाते हैं, ऐसा करके हम अपनी याद ताजा रखते हैं, अपना परमार्थ कमाते हैं। आमतौर पर आज के दिन पश्चिम में प्रेमी दूर–दूर से इकट्ठे होकर एक सप्ताह अभ्यास, सतसंग और शब्दों का कार्यक्रम रखते हैं।

हम भी गुरु की याद को ताजा रखें, अपने जीवन को सफल बनाएं। आप सबको एक बार नहीं, करोड़ों बार उस परमात्मा कृपाल के जन्मदिन की बहुत–बहुत बधाई और मुबारक। ***

किड्स कॉर्नर

परवरिश

परमात्मा हमारी परवरिश करते हैं, हमारा ख्याल रखते हैं और साँस-साँस के साथ हमारी रक्षा करते हैं। जिन महात्माओं की आँखें खुली होती हैं, ''वे कहते हैं कि कोई हमारी पालना कर रहा है, कोई हमारी चिंता करने वाला भी है।'' जिनकी आँखें खुली नहीं होती, वे अपने-आप पर मान करते हैं। हम अपने आप पर जितना मान करते हैं और परमात्मा को दूर समझते हैं, हम उतने ही दुखी और परेशान होते हैं।

एक बार गुरु नानकदेव जी पंजाब में विचर रहे थे, प्रेमियों से मिलने जा रहे थे, मर्दाना मक्की का दाना खाने लगा। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर कहा, ''देख मर्दाना, यह दाना लाहौर के एक सफेद मुर्गे ने खाना है।'' मर्दाना की आँखें खुली हुई नहीं थी इसलिए उसने कहा, ''जब दाना मेरे हाथ में है तो मैंने क्यों नहीं खाना?'' मर्दाना बहुत जल्दी से उस दाने को मुँह में डालने लगा तो वह दाना उसकी नाक में चला गया। बहुत उपाय किए, बहुत लोगों के पास गए लेकिन वह दाना नाक में से नहीं निकला आखिर मर्दाना का नाक सूज गया।

गुरु नानकदेव जी अंदरूनी राज के वाकिफ थे, वे मर्दाना को साथ लेकर लाहौर की तरफ चल पड़े। आगे चलकर देखा तो एक सफेद मुर्गा आ रहा था। गुरु साहब ने कहा, ''मर्दाना, इस मुर्गे ने वह दाना खाना है।'' थोड़ा आगे जाकर मर्दाना को छींक आई, दाना बाहर गिर गया और मुर्गे ने उस दाने को खा लिया। गुरु साहब कहते हैं:

नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे,जहा दाणे तहाँ खाणे नानका सचु है।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा सबकी रोटी-रोजी लिखने लगे और जब सन्तों की बारी आई तो उनके हाथ पर रखकर नीचे से हाथ मार दिया और सारा बिखेर दिया कि अब तुम इसे चुगो।'' इसलिए महात्मा दुनिया में परमात्मा का बिखेरा हुआ अन्न-पानी चुगते हैं।

मिलान करें

A		B
1.	गुरु नानकदेव जी का जन्म स्थान	A *मरना सच जीना झूठ*
2.	गुरु नानकदेव जी के शिष्य जो हमेशा उनके साथ रहते थे	B *परमात्मा के रंग*
3.	गुरु नानकदेव जी के शिष्य जिन्हें उन्होंने नाम देने का अधिकार बख्शा	C *उदासियाँ*
4.	गुरु नानकदेव जी की यात्राओं को क्या कहते हैं?	D *राय भोई की तलवंडी* (अब ननकाना साहिब, पंजाब पाकिस्तान)
5.	गुरु नानकदेव जी की बाणी 'आसा जी की वार' पर बाबा जी ने किताब लिखी	E *भाई लैहणा*
6.	गुरु नानकदेव जी की मर्दाना को दी हुई सीख	F *भाई बाला और मर्दाना*

सही उत्तर :

1 = D, 2 = F, 3 = E, 4 = C 5 = B 6 = A

गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं। सन्त-महात्माओं ने सतसंग को पारस की वट्टी कहा है। सतसंग के जरिए ही हमारा भूला-भटका मन काबू में आता है, हम नहीं जानते कि सन्त के किस लफ्ज ने हमारी जिन्दगी पलट देनी है।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926

सन्त हमें सिमरन की प्रेक्टिस इसलिए करवाते हैं कि अन्त समय में हमारे मुंह से गुरु का दिया हुआ सिमरन निकले या गुरु का तस्सवुर आंखों के सामने हो।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज